(Pages : 6) **G – 4395**

Reg. No. : .....

Name : .....

Second Semester M.A. (Hindi) Degree Examination, July 2019

HL 221 – MEDIEVAL POETRY: BHAKTHI PERIOD

(2015 Admn Onwards)

Time : 3 Hours Max. Marks : 75

I. सही उत्तर चुनकर लिखिए ।

1. कबेर दास का गुरू कौन था ?

(a) वल्लभाचार्य (b) नरहरीदास

(c) रामानन्द (d) रामानुजाचार्या

2. 'पद्मावत' की रचना किस वर्ष में हुई?

(a) 1540 (b) 1580

(c) 1620 (d) 1640

3. कबीर की प्रामाणिक रचना का नाम क्या है ?

(a) सबदांजलि (b) बीजक

(c) कीर्तियोग (d) चान्दायन

4. 'पदमावत' में कवि ने किस भाषा का प्रयोग क्या है?

(a) अवधी (b) राजस्थानी

(c) ब्रज (d) भोजपुरि

P.T.O.

gcwcentrallibrary.in

5. सूरदास के दृष्टकूट-पदों का संग्रह किस रचना में मिलता है?

(a) सूरसागर (b) साहित्य लहरी

(c) सूरसारावली (d) सूरसाठी

6. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना जायसी की नहीं हैं?

(a) अखरावट (b) आखिरी कलाम

(c) पदमावत (d) मधुमालती

7. तुलसीदास किसके शिष्य थे?

(a) वल्लभाचार्य (b) बाबा नरहरिदास

(c) बाबा नरसिंहदास (d) बाबा रामदास

8. निम्नलिखित में से तुलसीदास की रचना चुनकर लिखिए।

(a) विनयपत्रिका (b) रामायण मंजरी

(c) रामचन्द्रिका (d) अष्टयाम

9. "रांम नांम कै पटंतरै देवे कौ कछु नांहिं" – यह किस कवि का कथन हैं ?

(a) सूरदास (b) तुलसीदास

(c) कबीरदास (d) जायसी

10. 'सूर पंचरत्न' का संपदन किसने किया?

(a) श्यामसुन्दर दास (b) लाल भगवानदीन दीन

(c) डॉ. राजदेव सिंह (d) रामचन्द्र शुक्ल

(10 × 1 = 10 Marks)

gcwcentrallibrary.in

II. किन्हीं **पांच** प्रश्नों के लगु उत्तर लिखिए।

1. कबिर का रहस्यवाद
2. सूरदास का श्रृंगार वर्णन
3. जायसी की प्रेम भावना
4. रामकाव्य परंपरा में तुलसी का स्थान
5. सूरदास की भक्ति भावना
6. जायसी का विरह वर्णन
7. कबीरदास की उलटबासियाँ
8. तुलसी की भाषा शैली

(5 × 5 = 25 Marks)

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. कबीर साहित्य के सामाजिक पक्ष पर विचार करते हुए उनकी क्रान्ति भावना को स्पष्ट कीजिए?
2. 'सूरदास के काव्य में भावपक्ष और कलापक्ष का सुन्दर समन्वय हुआ हैं' – इस कथन का विश्लेषण कीजिए।
3. अयोध्याकांड के आधार पर तुलसी की काव्यकला की विशिष्टताओं का परिचय दीजिए।
4. प्रेमाख्यान काव्य परंपरा को ध्यान में रखते हुए 'पद्मावत' महत्व को रेखांकित कीजिए।

(2 × 10 = 20 Marks)

IV. सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. (a) रांम भजा सोइ जीता जग मैं।

नांम भाज सोइ जीता रे ।।

हाथ सुमिरनी पेट कतरनी पढ़ै भागवत गीत रे ।

हिरदै सुद्ध किया नहिं बौरे कहत सुनत दिन बीता रे ।।

gcwcentrallibrary.in

आन देव की पूजा कीन्हीं हरि से रहा अमिता रे ।

धन जोबन तेरा यहीं रहैगा अंत समय चलि रीत रे ।।

बांवरिया बन मैं फंद रोपै संग, मैं फिरै निचीता रे ।

कहै कबीर काल यौं मारै जैस मिग्र कौं चीता रे ।।

अथवा

(b) बासुरि सुख नां रैनि सुख नां सुख सुपिनै मांहिं ।

कबीर बिछुड़े रांम सौं नां सुख धूप न छांहिं ।।

कमोदिनों जलहरि बसै चंदा बसै अकासि ।

जो है जाका भावता सो ताहि कै पासि ।।

स्वामि सेवक एक मत मत मैं मत मिलि जाइ ।

चतुराई रीझै नहीं रीझै मन कै भाइ ।।

हंसि हंसि कंत न पाइअ जिन पाया तिन रोइ ।

हांसी खेलां पिउ मिलै तौ नहीं दुहागिनि कोइ ।।

2. (a) अपने को को न आदार देय ।

ज्यों बालक अपराध कोटि करै मात न मारै तेय ।।

ते बेली कैसें दाहियतु है जे अपने रस भेय ।

श्रीसंकर बहु रतन त्यगि कै विषहि कंठ लपटेय ।।

माता अछत छीर बिनु सुत मरै अजाकंठ कूच सेय ।

यद्यपि 'सूर' महा पतित है पतित पावन तुम तेय ।।

अथवा

gcwcentrallibrary.in

(b) देखो यह विपरीत भई ।

अद्भुत रूप नारि करि आई, कपट हेत क्यों सहै दई ।।

कान्है लै जसुमति कोरा तें रूचि करि कंठ लगाई ।

तब वह देह धरो जोजन लौ स्याम रहे लपटाई ।।

बड़े भाग हैं नन्द महर ते बड़ भागिन नन्दरानी ।

'सूर' स्याम उर ऊपर पारे यह सब घर घर जानी ।।

3. (a) जब तें राम ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ।।

भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ।।

रिधि सिधि संपत्ति नदिं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई ।।

मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुच अमोले सुंदर सब भाँती ।।

अथवा

(b) भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जल जारि करइ सोइ छारा ।।

जरि तुम्हारि चह सवित उखारी। रूँधहु करि उपाउ बर बारी ।।

तुम्हाहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ ।

मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ।।

4. (a) चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा । साजा बिरह दुंद दल बाजा ।

धूम, साम, धौरे घन घाए । सेत धजा बग-पाँते देखाए ।

खड़ग-बीजु चमकै चहूँ ओरा । बूंद-बान बरसहि घन घोरा।

ओनई घटा आइ चहूँ फेरी । कंत, उबाऊ मदन हौं घेरी ।

अथवा

gcwcentrallibrary.in

(b) पूस जाड़ थर थर तन काँपा । सूरुज जाइ लंका–दिसि चाँपा ।

बिरह बाढ़, दारून भा सीऊ । कँपि कँपि मरौं, लेइ हरि जीऊ ।

कंत कहाँ, लागौं ओहि हियरे । पंथ अपार, सूझ नहिं नियरे ।

सौर सपेती आवै जूड़ी । जानहु सेज हिवंचल बूड़ी ।

(4 × 5 = 20 Marks)

---

gcwcentrallibrary.in